6. छोटे जनपद बने

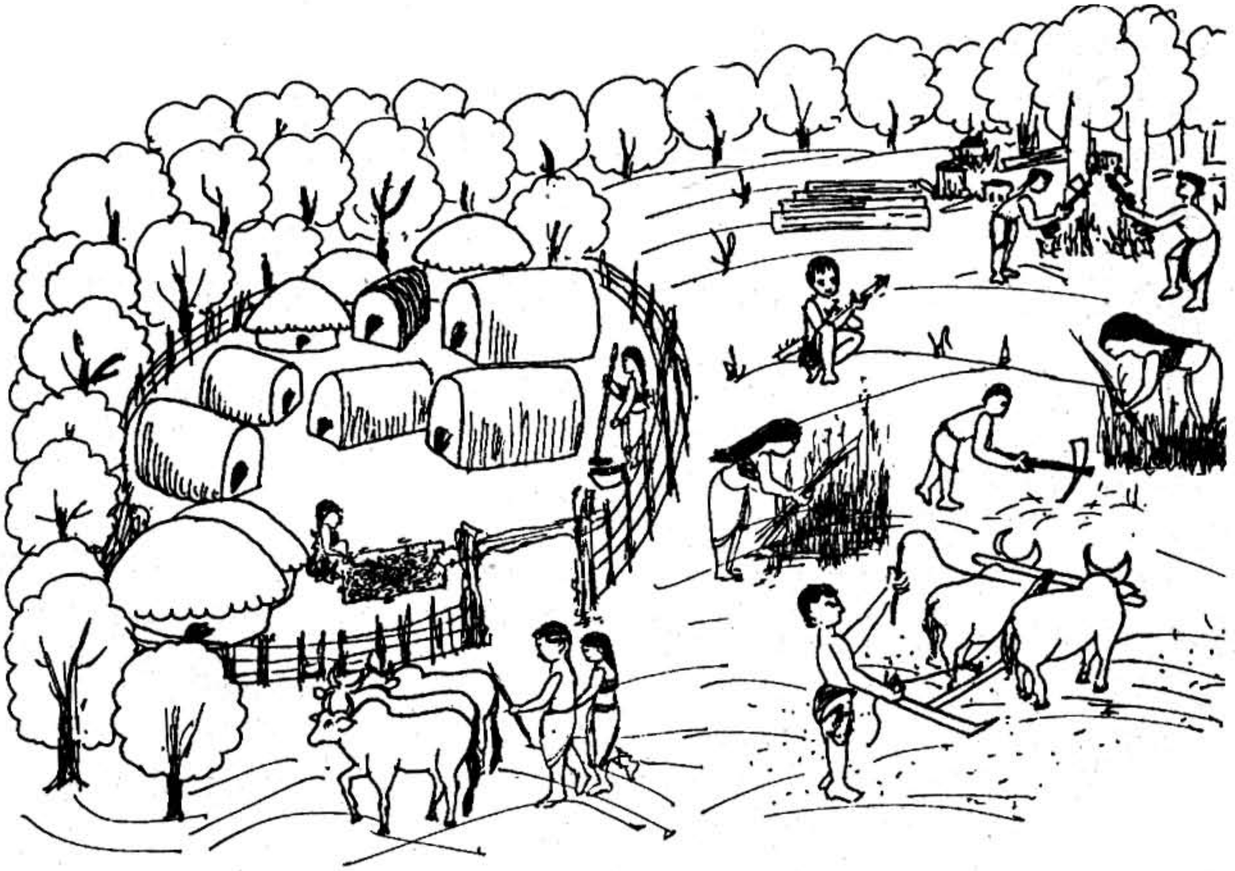

इस पाठ में जिस समय की कहानी है उस समय कई नई बातों की शुरुआत हुई थी। पाठ के उपशीर्षकों को पढ़ कर कम से कम तीन ऐसे शब्द ढूंढो जिन्हें तुम पुस्तक में पहली बार पढ़ रहे हो। इन नए शब्दों के क्या मतलब हो सकते हैं, चर्चा करो।

सूखती नदी

पशुपालक आर्य लोग सिन्धु और सरस्वती नदियों के किनारे रहते थे। धीरे-धीरे समय बीता। लगभग पांच सौ साल बीत गए। किसी कारण से उन दिनों सरस्वती नदी सूखने लगी। धीरे-धीरे नदी पूरी तरह सूख गई और नदी की जगह रेत ही रेत रह गई। सरस्वती नदी के किनारे रहने वाले लोग दूसरी जगह जाने लगे। आर्यों के जन भी अपने पशुओं के लिए चारा-पानी खोजते हुए निकल पड़े।

लोग किन नदियों के किनारे जा कर बसे, मानचित्र 3 देख कर बताओ।

इन नदियों के किनारे पहले से कई छोटी

बस्तियां थीं। इन बस्तियों में रहने वाले लोग खेती-बाड़ी करते थे। इन्हीं लोगों के बीच सरस्वती नदी के किनारे से आए लोग बसते गए।

समय गुज़रता गया। आर्यों के जन और दूसरे खेती करने वालों के बीच मेल-जोल, लेन-देन बढ़ता गया। वे आपस में घुल मिल गए।

पशुपालन की तुलना में खेती का महत्व बढ़ा

हम जानते हैं कि पहले पशुपालक आर्य सिर्फ जौ नाम का अनाज उगाते थे। पर, गंगा-यमुना नदियों के किनारे वे गेंहू, धान, दाल और तिलहन भी उगाने लगे। उनका जीवन अब खेती के सहारे चलने लगा। वे पशु अब भी पालते थे पर पहले से कम। पहले पूरा जीवन पशुओं के सहारे चलता था। पर अब उनके लिए खेती प्रमुख हो गई।

ऐसी दो-तीन बातें सोचो जो खेती अपनाने के बाद आर्यों के जीवन में बदलीं होंगी?

इस समय संस्कृत भाषा में तीन और वेद रचे गए। इनके नाम थे - **यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद** इन वेदों में यज्ञों, मंत्रों आदि की बातों के साथ खेती की बातें भी पढ़ने को मिल जाती हैं। कहीं ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि अच्छी वर्षा हो और अच्छी धूप खिले ताकि फसल अच्छी हो। कहीं तरह-तरह की फसलों का नाम आता है, जैसे धान, गेहूं, तिल, दालें। इन्हीं बातों से पता चलता है कि आर्यों के लिए खेती महत्वपूर्ण हो गई थी।

सरस्वती नदी के किनारे से लोग क्यों जाने लगे थे?

गंगा-यमुना नदियों के किनारे पहले से रहने वाले लोग क्या करते थे?

गंगा-यमुना के मैदान में रहते हुए आर्यों के जीवन में क्या बदलाव आए?

इस समय कौन से वेद रचे गए?

जनपद बने

उस समय गंगा-यमुना नदियों के मैदान में बहुत से जन खेती करने लगे थे। आमतौर पर एक जन के लोग एक साथ आ कर बसते थे। एक इलाके में एक जन के परिवार खेती करने लगते और वहीं गांव बसाकर रहने लगते। इस तरह एक इलाका एक जन का **जनपद** कहलाने लगता था। जनपद का मतलब था जन के बसने का इलाका।

जनपद के गांवों में रहने वाले आर्य लोगों और दूसरे लोगों ने एक दूसरे की भाषा भी सीखी और एक दूसरे के देवी-देवताओं को भी मानना शुरू किया।

कई बार जनपदों के बीच युद्ध छिड़ जाया करते थे। पहले की तरह ही जन के लोग राजन्यों और राजा के नेतृत्व में लड़ने जाते थे।

एक जनपद के लोग दूसरे जनपद की ज़मीन पर खेती करने की कोशिश करते और वहां अपना गांव बसाना चाहते। इस कारण युद्ध हो जाता।

कई बार एक जनपद के लोग दूसरे जनपद की फसल ही लूट कर ले जाते और युद्ध छिड़ जाता।

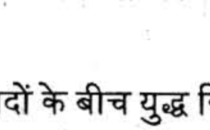

पशुपालन के दिनों में भी क्या इन्हीं कारणों से लड़ाई हुआ करती थी? क्या तुम्हें कोई फर्क नज़र आता है?

नक्शे में उस समय के प्रमुख जनों के जनपद दिखाए गये हैं। नक्शा देख कर खाली स्थान भरो-

यमुना नदी के दोनों तरफ .... जनपद बसा था।

पांचाल जनपद .... नदी के दोनों तरफ बसा था।

सूरसेन जनपद की पश्चिम दिशा में .... जनपद था। सब से उत्तर में .... जनपद था।

इन जनपदों के बारे में एक प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ में पढ़ा जा सकता है। वह कौन सा ग्रंथ है, पता करो।

कहानी - जनपद का जीवन

जनपद में आम लोग, राजा-राजन्य और ब्राह्मणों का जीवन कैसे बदल रहा था - यह जानने के लिए एक कहानी पढ़ो।

कल्पना करो कि हम कुरु जनपद के एक गांव में पहुंचे।

गृहपति और राजन्य

गंगा नदी के किनारे बसे एक गांव में खेती करने वालों के बीस घर थे। खेती करने वालों को वे लोग **गृहपति**कहते थे। इन लोगों ने कई वर्षों पहले यहां ज़मीन तोड़ कर खेती शुरू की थी।

इन बीस घरों में से एक घर सुमंत गृहपति का था। सुमंत इस गांव का मुखिया था। उसके भी अपने खेत थे जहां उसके परिवार के लोग काम करते थे।

एक दिन सुमंत के घर चार मेहमान आये। ये लोग कुरु जनपद के राजा के रिश्तेदार यानी राजन्य थे। राजा हस्तिनापुर में रहता था। उसने एक ख़ास काम से राजन्यों को गांव-गांव भेजा था।

सुमंत के घर में राजन्यों का स्वागत हुआ। उन्हें आदर से खिलाया-पिलाया गया।

कुछ महीने पहले भी राजन्य गांव आये थे। तब वे राजा के लिए बलि मांगने आये थे। पिछली बार जब राजन्य बलि मांगने आये थे तो गांव के गृहपतियों ने मना कर दिया था। सुमंत सोचने लगा कि अब इस बार ये राजन्य क्यों आये हैं?

पशुपालक आर्यों के समय में जन के लोग अपनी खुशी से राजा को भेंट या बलि दिया करते थे। मगर अब यह बात बदलने लगी थी। छोटे जनपदों में राजा और राजन्य खेती करने वालों से समय-समय पर बलि मांगने लगे थे।

एक राजन्य ने सुमंत से कहा, “शाम को सब गृहपतियों की सभा बुलाइए। हमें राजा का एक **संदेश** आप सब को देना है।”

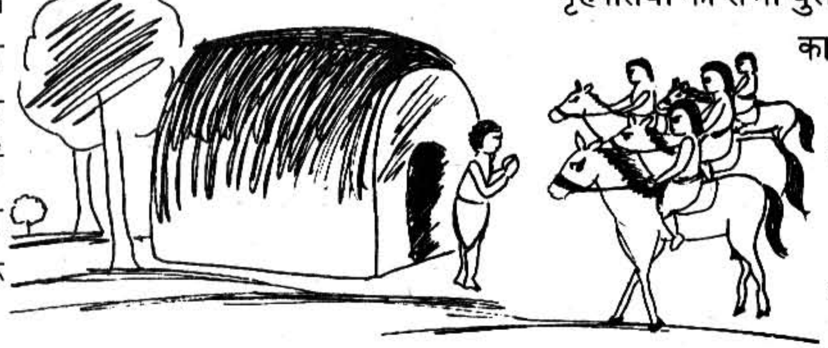

गृहपति सुमंत ने राजन्यों का स्वागत किया

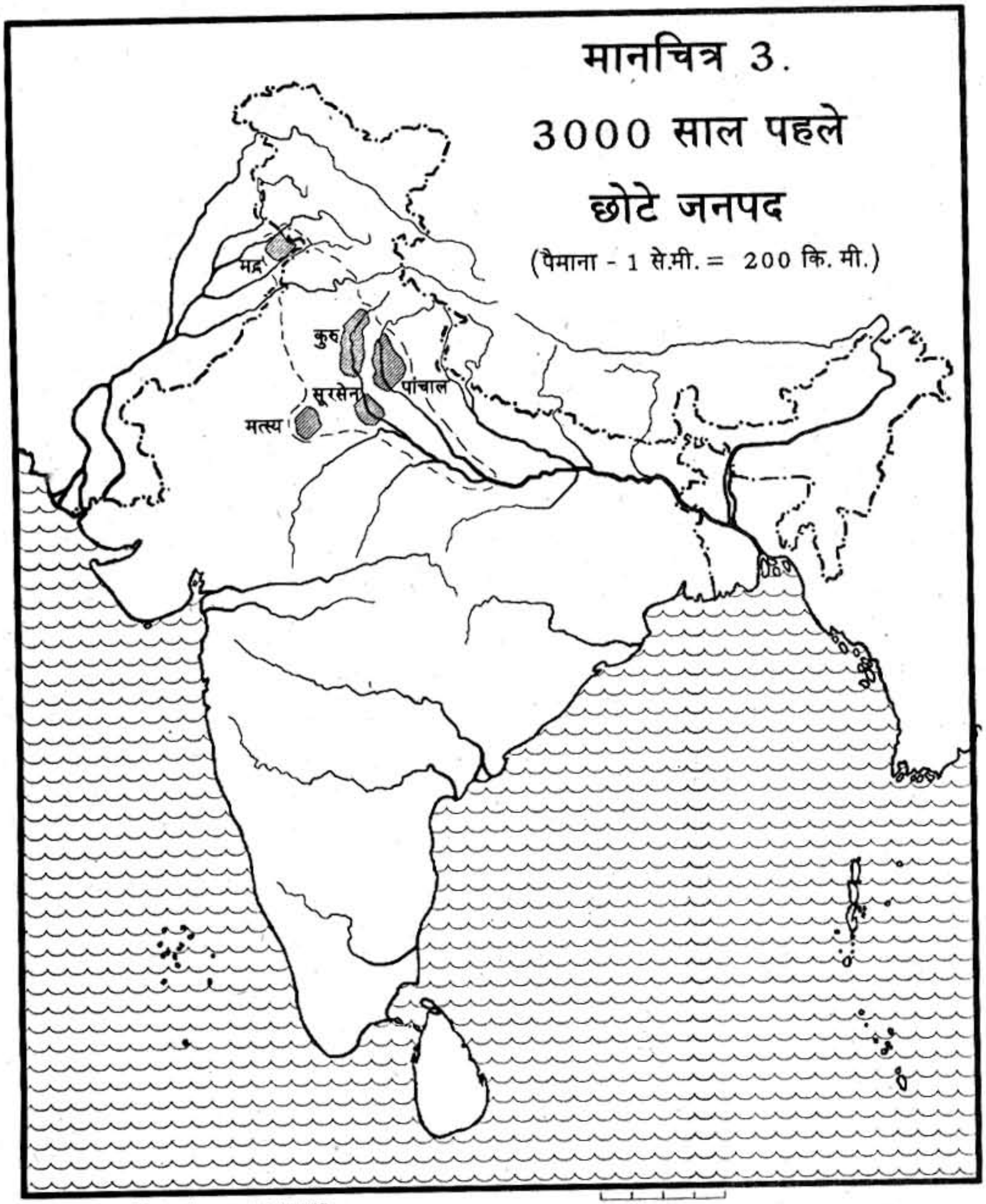

मानचित्र 3.

3000 साल पहले छोटे जनपद

(पैमाना - 1 से.मी. = 200 कि. मी.)

Based upon Survey of India outline map printed in 1987
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.

© Government of India, 1987.

संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—
सागर	〰
आर्यों के बसने का इलाका	◌
जनपदों का इलाका	●

राजसूय यज्ञ का न्यौता और बलि की मांग

शाम को सभा शुरू हुई जिसमें गांव के सारे गृहपति आये। एक राजन्य बोला, "हे कुरू जन के गृहपतियों! हम आप लोगों को निमंत्रण देने आये हैं। अगली पूर्णमासी को अपने नए राजा हस्तिनापुर में **राजसूय यज्ञ** करेंगे। उसमें आप सब आयें। राजसूय यज्ञ बहुत बड़ा यज्ञ है। इसे करने से देवता बहुत खुश होंगे और राजा को बहुत **शक्तिशाली** बनाएंगे। राजा का बहुत नाम होगा।"

सुमंत ने कहा, "राजसूय यज्ञ में तो बहुत धन खर्च होगा! सैकड़ों गायें बलि में चढ़ाई जायेंगी! ब्राह्मण इतना बड़ा यज्ञ करवाएंगे इसलिए उन्हें **दक्षिणा** में हज़ारों गायें, घोड़े और बहुत सा सोना देना पड़ेगा। यज्ञ में जन के सब लोग आएंगे, तो इतने सारे लोगों की रसोई करनी होगी। इस सब के लिए क्या हमारे राजा के पास **साधन** हैं?"

राजन्य बोला, "राजा और राजन्यों को साधन कहां से मिलता है? आप खेती करने वाले गृहपति जो हमें देते हैं, वही हमारा साधन है। आप लोग बलि में जो धन देते हैं उसी से यह खर्च होगा।"

एक गृहपति बोला, "तो आप राजसूय यज्ञ के लिए हमसे बलि (भेंट) मांगने आये हैं।"

राजन्य, "हां, हम चाहते हैं कि इस गांव से सौ गायें, पचास बोरे धान और पचास बोरे दाल बलि में दी जाये।"

सब गृहपति एक आवाज़ में बोले, "नहीं हम इतनी अधिक बलि नहीं दे सकते हैं। दो माह पहले ही तो मत्स्य जनपद के लोग हमारी फसल और गायें लूटकर ले गये थे। पर आप लोग हमारी रक्षा करने नहीं आए। अब हमारे पास बलि देने के लिए कुछ नहीं बचा है।"

राजन्य कहते रहे कि गृहपतियों को बलि में कुछ तो देना ही पड़ेगा। तब तय हुआ कि उस गांव के लोग 50 गायें, 30 बोरे **धान** और 20 बोरे दाल देंगे।

राजन्यों को किसने गांव भेजा था और क्यों?

राजसूय यज्ञ के लिए क्या-क्या चाहिए था?

गृहपतियों ने राजसूय यज्ञ में क्या सामान देने की बात मानी?

राजा ने जितना सामान मांगा था, उतना गृहपतियों ने क्यों नहीं दिया?

याद करके बताओ पशुपालक आर्यों के दिनों में बलि कब और कैसे दी जाती थी?

जोड़ी बनाओ —

राजसूय, गृहपति, जन, राजन्य, जनपद, बलि, कुरु-

- जिसके परिवार में खेती होती हो
- एक वंश के लोगों का कबीला
- जन का नाम
- एक वंश के लोग जिस इलाके में बसे थे
- लोगों द्वारा राजा को दी गई भेंट
- राजा के रिश्तेदार
- एक बड़े यज्ञ का नाम

गृहपतियों के नौकर-चाकर

राजन्यों के जाने के कुछ दिनों बाद राजसूय यज्ञ में जाने की तैयारियां शुरू हुईं। गृहपतियों के नौकर-नौकरानियों ने अनाज-दाल साफ करके बोरियों में बांध कर रखा। नौकरों ने गायों को नहला कर उनके सींगों को रंगों से सजाया। ये नौकर-नौकरानी कुरु जन के लोग नहीं थे। वे आसपास के जंगलों में रहने वाले लोग थे जो जंगलों में भोजन की कमी के कारण इन गांवों में आ कर रहने लगे थे। इन लोगों को गृहपतियों ने अपने घर के काम करने के लिए रखा था।

सुमन्त के घर नेल्ली और शंभू काम करते थे। राजसूय यज्ञ में जाने के कुछ दिन पहले ही सुमन्त ने नेल्ली और शंभू को गायों के साथ हस्तिनापुर भेज दिया। उनकी बेटी रंगी भी अपने मां-बाप के साथ चल दी। उसे बहुत खुशी थी कि वह हस्तिनापुर जाएगी, राजसूय यज्ञ देखेगी और खूब पकवान खाएगी।

सही विकल्प चुनकर भरो :-

(1) गृहपतियों के नौकर उनके जन के लोग – ________ (होते थे/नहीं होते थे।)

(2) नौकर गृहपतियों के .... में काम करते थे(घर/खेत)

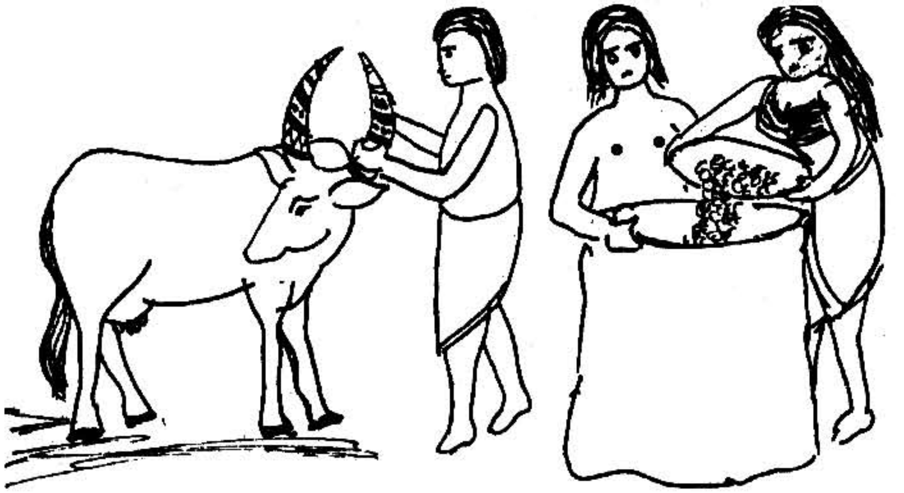

राजा, बलि और यज्ञ

जैसा कि हमें दिख रहा है जनपद के लोगों से राजा व राजन्य पहले से ज़्यादा बलि लेने लगे थे और वह भी मांग कर लेने लगे थे। वे पहले से ज़्यादा बड़े यज्ञ भी करने लगे थे। आखिर ऐसा क्यों होने लगा था?

उन दिनों राजा और राजन्यों को अपनी शक्ति बढ़ाने के मौके दिखने लगे थे। बलि में मिला अनाज इकट्ठा करके वे और अधिक धनवान बन सकते थे। ज़्यादा से ज़्यादा घोड़े, हथियार, जेवर आदि **प्राप्त** कर सकते थे। शान और ठाठ-बाठ से रह सकते थे। कई नौकरों और दास-दासियों को अपनी सेवा के लिए रख सकते थे।

अपना बड़प्पन दिखाने के लिए ही राजा बड़े-बड़े यज्ञ करवाना चाहते थे।

राजा की चिंता

ऐसा ही यज्ञ कुरू जनपद का राजा कर रहा था। हस्तिनापुर में त्यौहार का सा माहौल था।

सब यज्ञ की तैयारी में लगे थे। फिर भी राजा को चिन्ता थी। वह अपने **पुरोहित** को अपनी परेशानियां बता रहा था। पुरोहित वह ब्राह्मण था जो राजा के लिए राजसूय यज्ञ करवा रहा था।

राजा ने पुरोहित से कहा, "पुरोहित जी, गृहपति ठीक से बलि नहीं देते। वे मेरे आदेश नहीं मानते। मैं जितनी बलि मांगता हूं उतनी न देकर वे अपनी **सुविधानुसार** देते हैं। मुझे बलि में जो मिलता है उसमें से राजन्यों को भी बांटना होता है। अगर राजन्यों को बलि का हिस्सा देकर खुश नहीं रखूं तो वे मुझे हटाकर किसी और को राजा बना देंगे। इस तरह मैं एक शक्तिशाली राजा कैसे बन पाऊंगा?"

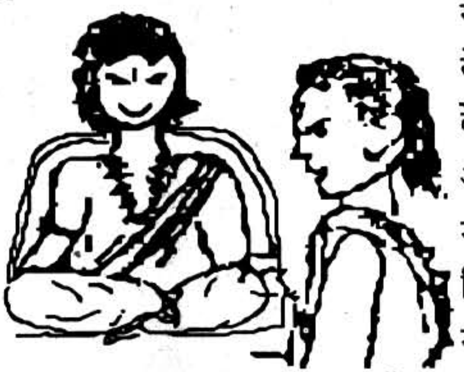

तुमने ऊपर देखा था कि कैसे राजा के मांगने पर भी गृहपति बलि देने में आनाकानी कर रहे थे। उन दिनों राजा के आदेशों को लोग आसानी से नहीं मानते थे। लोगों को मनाना पड़ता था और इसीलिए राजा को अपनी शक्ति जताने की ज़रूरत महसूस होती थी।

राजा को जवाब देते हुए पुरोहित बोला, "राजन, इस राजसूय यज्ञ से हम पुरोहित तुम्हें अपार शक्ति दिलवायेंगे। इस यज्ञ से देवता खुश होंगे और वे तुम्हारी मदद करेंगे। तब कोई भी तुम्हारी **आज्ञा** को नहीं टाल सकेगा।"

वाक्य पूरे करो –

राजा राजसूय यज्ञ करवा रहा था क्योंकि ________________।

पशुपालक आर्यों के दिनों में ________________ ________ के लिए यज्ञ किया जाता था।

राजसूय यज्ञ

पशुपालक आर्यों के समय युद्ध में जन की जीत के लिए और जन की भलाई के लिए छोटे-छोटे यज्ञ किए जाते थे। मगर छोटे जनपदों में राजा बहुत बड़े और खर्चीले यज्ञ करने लगे थे। वे चाहते थे कि इन यज्ञों से राजा और राजन्यों को शक्ति मिले।

कुरु जनपद का राजसूय यज्ञ लगातार पांच महीने चला। अग्नि में हज़ारों गायों व बकरियों का चढ़ावा दिया गया। अनगिनत बोरे अनाज, घी, और सोना-चांदी भी यज्ञ में डाले गये। राजा का बहुत नाम हुआ।

यज्ञ के **समापन** पर कुरु जनपद के सभी गांवों से गृहपति और राजन्य आए थे। राजन्य राजा के पास बैठे और सुमंत जैसे गृहपतियों को यज्ञ मण्डप से थोड़ा हटाकर बिठाया गया। मगर रंगी की इच्छा पूरी न हो सकी। उसे व अन्य नौकर-चाकरों को शहर के बाहर रहना पड़ा। मण्डप के पास भी वे नहीं आ सकते थे।

'बलि क्यों दें?'

यज्ञ समाप्त होने पर राजा को बलि देने का समय आया। गृहपतियों ने अपनी गायें और अनाज व दाल के बोरे राजा के सामने पेश किए।

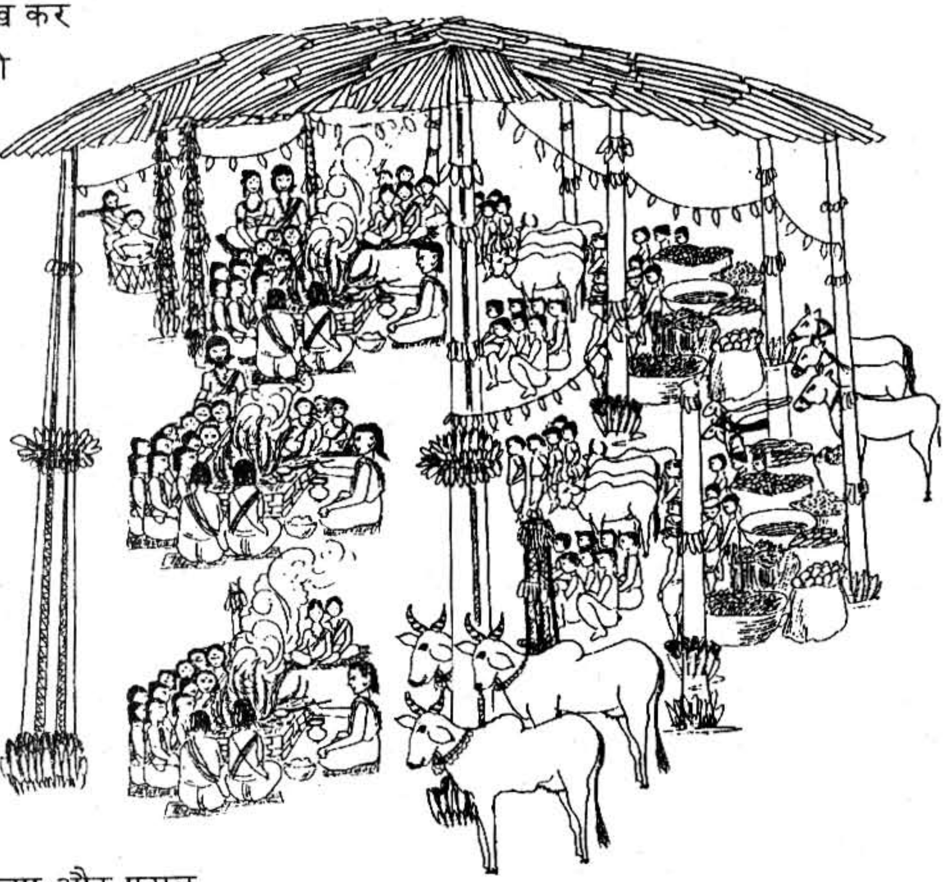

बलि में मिली चीज़ों को देख कर राजा खुश हुआ। बलि में जो चीज़ें मिल रही थीं उन्हें राजा ब्राह्मणों और राजन्यों में बांटता गया। सैकड़ों गायें, सोना, अनाज, दास, दासियां, ब्राह्मणों को दक्षिणा में दी गयीं।

पर, राजा के ध्यान में आया कि पांच गांव के गृहपति बलि नहीं लाए हैं। जब राजा ने कारण पूछा तो वे बोले, "राजन, कुछ दिन पहले दूसरे जनपद के लोगों ने हमारे गांवों पर हमला किया और फसल व जानवर लूट के ले गए। हम सब गांव वालों ने उनसे लड़ाई की पर हार गए। आप या राजन्यों में से कोई हमारी मदद के लिए नहीं आया। हम आपको बलि में क्या दें? और क्यों दें?"

वर्ण और उनके कर्त्तव्य

लोगों का जवाब सुन कर राजा को बहुत गुस्सा आया। गुस्से में राजा कुछ करने ही वाला था कि पुरोहित ने उसे रोक कर कहा, "राजन, सभी को अपना **कर्त्तव्य निभाना**चाहिये। राजा और राजन्य समाज के एक **विशेष** हिस्से हैं। ये **'क्षत्रिय वर्ण'**के हैं। इनका काम है राज करना और शत्रुओं से लोगों की रक्षा करना।"

फिर पुरोहित गृहपतियों की तरफ देख कर बोला, "मगर राजा और राजन्यों को बलि देना आप खेती करने वालों का कर्त्तव्य है। खेती करने वाले **'वैश्य वर्ण'**के हैं। समाज के इस हिस्से के लोगों को अनाज उगाना चाहिये और अपनी उपज का कुछ भाग राजन्यों को बलि में और ब्राह्मणों को दक्षिणा में देना चाहिये। जिन पांच गांवों के गृहपतियों ने बलि नहीं दी है, उन्होंने ग़लत किया है।"

जिन गांवों के लोगों ने बलि नहीं दी थी, वे कहने लगे, "जब हमारे पास देने को कुछ नहीं है, फिर भी हमसे कह रहे हैं कि बलि देना हमारा

> धर्म है। ऐसा तो पहले नहीं होता था। हम इस जनपद में नहीं रहना चाहते। हम कहीं और जा के खेती कर लेंगें।" ऐसा कहते हुए वे सभा से चले गए। कुछ लोगों ने उन्हें मनाने की कोशिश की पर वे नहीं माने।
>
> उन लोगों के चले जाने से सभा के लोग परेशान हो गए और हल्ला होने लगा। सब बात कर रहे थे कि क्या राजा का बलि मांगना ठीक था? क्या गृहपतियों का बलि देने से मना करना ठीक था?

1. राजसूय यज्ञ में ऐसी क्या बातें थी जिनके कारण वह तुम्हें बहुत बड़ा यज्ञ लगा?

2. क्या तुम यज्ञ के चित्र में ब्राह्मणों, राजन्यों और गृहपतियों को पहचान पा रहे हो? इसमें नौकर-चाकर क्यों नहीं दिख रहे हैं?

3. पांच गांव के गृहपतियों ने बलि क्यों नहीं दी- जो सही विकल्प हैं उन पर सही का निशान लगाओ।

क. उनके पास देने के लिए कुछ नहीं था। ख. उन्होंने पहले ही बलि दे दी थी। ग. वे राजा और राजन्यों से नाराज़ थे। घ. उनके खेतों में फसल नहीं हुई थी।

4. रिक्त स्थान भरो -

पुरोहित ने कहा कि ———————— का काम रक्षा करना है और ——————— का काम ———————— को बलि देना है।

(क्षत्रिय/वैश्य/ब्राह्मण)

5. पांच गांव के गृहपतियों ने अंत में क्या किया?

वर्ण व्यवस्था और ऊंच नीच का भेदभाव

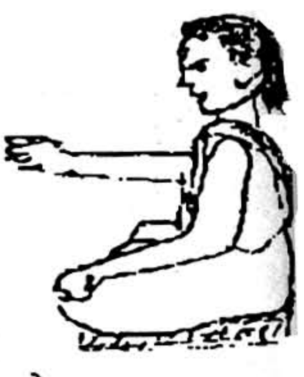

छोटे जनपदों के समय ब्राह्मण यह कहने लगे थे कि बड़े-बड़े यज्ञ करने से ही राजा को शक्ति मिलती है और खेतों में अनाज उगता है। यज्ञ केवल ब्राह्मण करवा सकते थे। इसलिए समाज में ब्राह्मण बहुत महत्वपूर्ण होने लगे थे।

अब ब्राह्मण लोगों को यह भी बताने लगे कि समाज में कौन ऊंचा है, कौन नीचा है, और हरेक के क्या-क्या काम हैं।

ब्राह्मण यह कहने लगे कि समाज में चार **वर्ण** के लोग हैं - **ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य** और **शूद्र**।

चार वर्णों में सबसे ऊंचे और श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं। इनका काम यज्ञ करना और करवाना है, ताकि देवता खुश रहें।

ब्राह्मणों के बाद क्षत्रियों(यानी राजा और राजन्य)का दर्जा था। इनका क्या काम था तुमने ऊपर पढ़ा।

क्षत्रियों के बाद वैश्यों का दर्ज़ा था। ये लोग थे खेती करने वाले गृहपति। इनका भी काम तुम पढ़ चुके हो। ब्राह्मण और क्षत्रिय अपने आपको वैश्यों से ऊंचा मानते थे। इसलिए वे वैश्यों से बराबरी से नहीं मिलते थे। उन्हें यज्ञों में भी अलग रखा जाने लगा था ।

इन सबके बाद **शूद्रों** का दर्ज़ा था। इस वर्ण के लोग थे नेल्ली और शंभू जैसे नौकर-चाकर। इन्हें सबसे नीचे वर्ण का माना गया। इनका काम था दूसरों की सेवा करना। इन्हें यज्ञ में भाग लेने नहीं देते थे और न ही वे खुद की खेती बाड़ी कर सकते थे।

चार वर्णों की **व्यवस्था** उन दिनों बनाई गई पर इसका असर बहुत समय तक रहा। चार वर्णों के बीच ऊंच-नीच की भावना आज तक समाज में है।

पाठ के इस अंश में किन बातों का वर्णन है — क. युद्ध कैसे हो? ख. यज्ञ कैसे हो? ग. लोगों के काम क्या हों? घ. लोगों का एक-दूसरे से रिश्ता क्या हो? च. राजा क्या चाहता था ?

अभ्यास के प्रश्न

1. यहां दो श्लोक दिये गये हैं। तुम यह पहचानो कि इनमें से कौन सा श्लोक पशुपालक आर्यों के समय का है और कौन सा छोटे जनपदों का समय का। साथ में कारण भी लिखना -

क) हे इन्द्र हमे अपार धन दौलत दो।
सैकड़ों गायें और घोड़े देकर,
हमारी यह कामना पूरी करो।

ख) दाल, तिल, गेहूं,
धान और फल,
सब कुछ यज्ञों से
होते हैं उत्पन्न।

2. इस पाठ के कितने हिस्से हैं? उनके उपशीर्षक क्या हैं?

3. क) राजसूय यज्ञ के बारे में जानकारी पाठ के किस-किस हिस्से में मिलेगी?
ख) राजसूय यज्ञ क्यों किया जाता था, कैसे किया जाता था और राजा इसके लिए धन कैसे जुटाता था- 6-7 वाक्यों में लिखो।

4. सही विकल्प चुनो-
राजा गृहपतियों से बलि लेने के लिए - क) उन्हें आदेश देता था। ख) गृहपतियों को मनाने के लिए राजन्यों को भेजता था। ग) वह गृहपतियों के घर से अनाज ज़बरदस्ती ले आता था।

5. यहां दिए लोगों के बारे में 4-5 वाक्य लिखो और समझाओ कि वे क्या काम करते थे और उनकी क्या इच्छाएं व परेशानियां रही होंगी।
क) राजा ख) राजन्य ग) गृहपति घ) ब्राह्मण च) नौकर-चाकर, दास-दासी।

6. क) चार वर्णों के नियम क्या थे?
ख) राजा व ब्राह्मण लोगों पर नए नियम कैसे लागू कर रहे थे ? जो-जो विकल्प सही लगें उन पर सही का निशान लगाओ —
दंड दे रहे थे/लोगों को समझा रहे थे/कह रहे थे कि नियम का पालन करना ही धर्म है।

6. क) छोटे जनपद जिस इलाके में बने थे, वो आज भारत के किन राज्यों में आता है — क. महाराष्ट्र ख.पंजाब ग. बंगाल घ. उत्तर-प्रदेश च. राजस्थान छ. मध्य-प्रदेश ।

ख. मानचित्र 2 और के मानचित्र 3 की तुलना करो और बताओ कि क्या सही है-

- दोनों मानचित्र भारत के बारे में हैं।
- दोनों मानचित्र एक ही समय के बारे में हैं।
- दोनों मानचित्रों में बताई गई बातों में कोई फ़र्क नहीं है।

8. पशुपालक आर्यों और छोटे जनपदों के समय में क्या अंतर आये? तालिका में लिखो।

	पशुपालक आर्यों का समय	छोटे जनपदों का समय
अ) लोगों का मुख्य काम क्या था-		
ब) बलि कौन देता था -		
स) बलि में क्या देते थे-		
द) बलि कब देते थे-		
य) बलि का क्या उपयोग होता था-		
र) युद्ध क्यों होता था -		
ल) यज्ञ क्यों किया जाता था -		

9. एक मज़ेदार तुलना

तुमने अलग-अलग लोगों के बारे में पढ़ा। उनके भोजन के बारे में जाना। भोजन मनुष्य के लिए बहुत ज़रूरी चीज़ है। हमारे भोजन में कई ऐसी चीज़ें होती हैं जो जल्दी सड़ जाती हैं। और कई चीज़ें काफी दिनों तक बची रहती हैं। जोड़-जोड़ कर उनका भंडार बनाया जा सकता है। ऐसी चीज़ों को काफी मात्रा में इकट्ठा किया जा सकता है।

इस दृष्टि से तुम शिकारी मानव, पशुपालक आर्य और छोटे जनपद के लोगों को देखो तो किसके भोजन में जोड़ कर रखने लायक चीज़ें ज़्यादा थीं? हरेक के भोजन की सूची बनाकर तुलना करो।

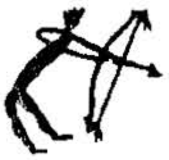

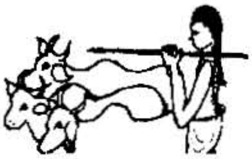

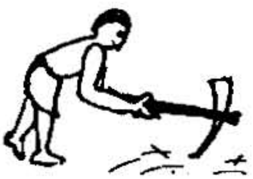

इतिहास के पाठों में जो चित्र बने हैं वे हमने बनाए हैं। जितने पुराने समय की हम बात कर रहे हैं तब के लोग अपने कोई चित्र छोड़ कर नहीं गए। उन्होंने चित्र छोड़े भी हों तो वे हमें नहीं मिलते।

उन लोगों के बारे में जो भी बातें हम पता कर सके उन पर सोच कर और कुछ कल्पना करके ये चित्र तुम्हारे लिए बनाए हैं। जैसे हमें यह पता है कि वे रथ की सवारी करते थे। पर क्या उनके रथ वैसे दिखते थे जैसा हमने चित्र में दिखाया है? ये हम नहीं कह सकते। इन चित्रों को तुम सचमुच के मत समझना।